Roll No. ..... Total Pages: 04

5174-A

M.A. (FINAL) EXAMINATION, 2019

SANSKRIT

Paper – IV

KAVYA (GADYA AVAM PADYA)

Time: Three Hours
Maximum Marks: 100

PART – A (खण्ड – अ) *[Marks: 20]*

Answer all questions (50 words each).

All questions carry equal marks.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – B (खण्ड – ब) *[Marks: 50]*

Answer five questions (250 words each).

Selecting one from each unit. All questions carry equal marks.

*प्रत्येक इकाई से **एक–एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्न कीजिए।*

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – C (खण्ड – स) *[Marks: 30]*

Answer any two questions (300 words each).

All questions carry equal marks.

*कोई **दो प्रश्न** कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।*

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड– अ

प्र.1 सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) ''कादम्बरी कथामुखम्'' में वर्णित शुक का क्या नाम था?

(ख) ''बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्'' सूक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) नैषधीयचरितम् (तृतीय सर्ग) में हंस ने अपनी क्या विशेषताएँ बताई?

(घ) हंस दमयन्ती को किस राजा के प्रति आकृष्ट करना चाहता है?

(ङ) ''विक्रमांकदेवचरितम्'' महाकाव्य के रचयिता कौन हैं?

(च) ''विक्रमांकदेवचरितम्'' महाकाव्य में वर्णित प्रधान रस कौनसा है?

(छ) देवी पार्वती के माता–पिता कौन हैं?

(ज) महाकाव्य ''कुमारसम्भवम्'' के नाम का अभिप्राय स्पष्ट करें।

(झ) ऐतिहासिक उपन्यास ''शिवराज विजय'' के रचयिता का नाम लिखिए।

(ञ) श्री भर्तृहरि द्वारा रचित तीन शतक कौनसे हैं?

खण्ड– ब

इकाई – I

प्र.2 किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

प्रायेणाकारण मिश्राण्यति करुणार्द्राणिच सदा खलु भवन्ति सतचेतांसि। यतः स मां तदवस्थामालोक्य समुपजातकरुणः समीपवर्तिनमृणि कुमार कमन्यतममब्रवीत ''अयं कथमपि शुकशिशुरक्तञ्जात पक्षपुट एवं नरूशिखरादस्मात् परिच्युतः श्येनमुख परिभ्रष्टेन वानेन भवितव्यम्।

अथवा

देव! विदित सकलशास्त्रार्थः, राजनीतिप्रयोगकुशलः, पुराणेतिहासं कथालापनिपुणः, वेदिता गीतश्रुतीनाम्, काव्य नाटकाख्यायिकाख्यानक प्रभृतीनामपरिमितानां सुभाषितानामध्येता स्वयञ्च कर्ता, परिहासलापपेशलः, वीणा – वेणु – मुरज प्रभृतीनां वाद्यविशेषाणामसमः श्रोता, नृत्यप्रयोगदर्शन निपुणः, चित्रकर्म्मणि प्रवीणः, द्यूतव्यापारे प्रगल्भः, प्रणयकलह कुपित कामिनी प्रसादनोपाय चतुरः, गजतुरगपुरुषस्त्री लक्षणाभिज्ञः सकल भूतल रत्नभूतोऽयं वैशम्पायनो नाम शुकः।

इकाई – II

प्र.3 किसी एक श्लोक की संस्कृत में व्याख्या कीजिए –

मनस्तु यं नोज्झति जातु यातु मनोरथः कण्ठपथं कथं सः।
का नाम बाला द्विजराजपाणिग्रहाभिलाषं कथयेदभिज्ञा।।

अथवा

धिक्। तं विधेः पाणिजातलज्जं निर्माति यः पर्वणि पूर्णभिन्दुम्।
मन्ये स विज्ञः स्मृततन्मुखश्रीः कृताऽर्धमौज्झद्भवमूर्ध्नियस्तम्।।

इकाई – III

प्र.4 किसी एक श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

वचांसि वाचस्पतिमत्सरेण साराणि लब्धुं ग्रहमण्डलीव।
मृक्ताक्षसूत्रत्वमुपैति यस्याः सा सप्रसादाऽस्तु सरस्वती वः।।

अथवा

न दुर्जनानामिह कोऽपि दोषस्तेषां स्वभावो हि गुणासहिष्णुः ।
द्वेष्यैव केषामपि चन्द्रखण्डविपाण्डुरा पुण्ड्कशर्करापि।।

इकाई – IV

प्र.5 किसी एक श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

महीभृतः पुत्रवतोऽपि दृष्टिस्तस्मिन्पत्ये न जगाम तृप्तिम्।
अनन्तपुष्पस्य मधोहि चूते, द्विरेफमाला सविशेषसङ्गा।।

अथवा

सा राजहंसैरिव सन्नताङ्गी, गतेषु लीलाञ्चित विक्रमेषु।
व्यनीयत प्रत्युपदेशलुब्धेरादित्सुभिर्नूपुर सिञ्जितानि।।

इकाई – V

प्र.6 महाकवि कालिदास की कृतियों का नामोल्लेख करते हुए कवि का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

महाकवि माघ के ''शिशुपालवधं'' महाकाव्य पर परिचयात्मक लेख लिखिए।

खण्ड– स

प्र.7 ''कादम्बरी'' संस्कृत गद्य काव्य में सर्वोत्कृष्ट रचना है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

प्र.8 ''नैषधीयचरितम्'' के तृतीय सर्ग की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

प्र.9 ऐतिहासिक महाकाव्य के रूप में ''विक्रमांकदेवचरितम्'' का मूल्यांकन कीजिए।

प्र.10 ''कुमारसम्भवम् – प्रथमसर्ग'' के आधार पर हिमालय का वर्णन कीजिये।

प्र.11 कवि भारवि द्वारा रचित ''किरातार्जुनीयम्'' में महाकाव्यत्व – लक्षणों की समीक्षा कीजिए।